दुर्यवनम्

लौ० वि०— यवनानां व्यृद्धिः । अलौ० वि०— यवन आम् दुर् ।
ऐसा विग्रह होने पर 'अव्ययं विभक्ति०' से व्यृद्धि अर्थ में वर्तमान 'दुर्' अव्यय का यवन शब्द के साथ समास होने पर 'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा होने के बाद 'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (आम्) का लोप होने पर रूप बना — यवन दुर् । इस स्थिति में 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'दुर्' की उपसर्जन संज्ञा होने के फलस्वरूप 'उपसर्जनं पूर्वम्' से उसका पूर्वप्रयोग होने पर ~~'दुर्यवन रूप बना'~~ —
~~दुर्यवन रूप बना~~

दुर्यवन

इस स्थिति में पुनः प्रातिपदिक संज्ञा तथा एकदेशविकृतमनन्यवत् इस न्याय से होने के बाद स्वौजसमौट्-० से 'सु' विभक्ति का आगम हो रूप बना —

दुर्यवन सु

इस स्थिति में 'अव्ययादाप्सुपः' से सु का लोप होने पर तथा 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से सु के ~~साथ~~ स्थान पर 'अम्' आदेश हो रूप बना —

दुर्यवन् अम् ।

इस स्थिति में अमि पूर्वः से अम् का पूर्व प्रयोग हो रूप सिद्ध हुआ —

दुर्यवनम्

Name :- Sonikumari
Class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

समास

नदीभिश्च

(1) प्रस्तुत सूत्र वरदराज विरचित लघुसिद्धान्त कौमुदी के समास प्रकरण के अव्ययीभाव समास का सूत्र है। मूल नदीभिश्च कहने से सूत्र का अर्थ स्पष्ट नहीं होता अतः इसकी स्पष्टीकरण के लिए 'प्राक्कडारात् समास' तथा 'अव्ययीभावः' की अनुवृत्ति करते हैं, संख्या वंश्येन' से संख्या तथा तथा सह सुपा से सह की अनुवृत्ति होने पर सूत्र का अर्थ होगा — नदी वाचक शब्दों के साथ संख्या वाचक शब्दों का समास होता है और वह समास अव्ययीभाव संज्ञक होता है। यह समाहार अर्थ में ही होता है
उदा० — पञ्चगङ्गम, द्वियमुनम् ।

(2) **अव्ययीभावे शरत्प्रभृतिभ्यः**

यह विधिसूत्र है। सूत्र की अभिव्यक्ति के लिए राजाहः सखिभ्यष्टच' से टच् की अनुवृत्ति होती है। समासान्ताः का अधिकार प्राप्त है। अतः सूत्र का अर्थ है — अव्ययीभाव समास में शरद आदि गण में पठित प्रातिपदिकों से समासान्त टच' (अ) प्रत्यय होता है।
जैसे :- शरदः समीपम् (शरद के समीप)
इस विग्रह में 'शरद्' शब्द से टच् करने पर 'उपशरदम्' रूप बनता है।
इसी प्रकार विपाशः अभिमुखम् (विपाश-व्यास नदी की ओर) इस विग्रह में प्रति विपाशम् रूप होता है।